



कई पाठशालाओं विद्यालयों, हाई स्कूलों  
और पुस्तकालयों के लिये स्वीकृत ।

## वल्लभ-वाणी

[ जैनाचार्य श्रीमद्विजय वल्लभ सूरेश्वर जी  
महाराज साहब के उपदेश—रत्न ]

संपादक, सम्पादक और प्रकाशक—

राजवैद्य चन्द्रगुप्त भारतीय, पिपलौदा C I

धीर जयन्ति  
२००६ वि०

न्यूडोवर  
दस आने

{ प्रथमावृत्ति  
२०००

# आभार

सादही (भारवा) निवासी श्रीमान् सेठ चन्दन मल जी अरूचन्द जीने अमान विभिर तरणि, कलिमाल फलतरु पञ्जाब वेसरी, पूज्यपद आचार्य देव १० व श्रीमद्विजय वल्लभ सुरेश्वर जी महाराज साहब के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में पचास पद निभूषित परिद्धन मुनि श्री समुद्र विजय जी महाराज साहब के सदुपदेश से २५०) रुपये इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए प्रदान किये अतः हम आभार व्यक्त करती हैं । साथ ही प्रकाशन के पूरे पादक बनने वाले महानुभावों को भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते ।

- |     |   |                              |                        |
|-----|---|------------------------------|------------------------|
| १०० | " | श्रीमान् सेठ अरूचन्द जी भैरू | रान जी सेठिया, बीकानेर |
| १०० | " | प्रसन्नचन्द जी कोचर,         | बीकानेर                |
| १०० | " | रामरतन जी कोचर,              | बीकानेर                |
| १०० | " | हीराचन्द जी शुक्लराज जी,     | नवा बाजार<br>बडौद      |
| ५०  | " | लालचन्द जी शुक्ल जी,         | सादही (भारवा)          |
| ५   | " | लक्ष्मीचन्द जी कोचर,         | बीकानेर                |

# अपनी वाँत

मैं सीमाशरणाशी हूँ कि मुझे प्रसिद्ध ब्रह्मा, परम प्रभाकर, श्रीमद्गैनाचार्य विजय बल्लभ सुरेश्वर जी महाराज साहब के व्याख्यानों को लिखने का अवसर मिला।

— गुरुदेव के अर्गाधज्ञान - रत्नाकर में से जो रत्न उपलब्ध किये जा सके हैं — उनको इस छोटी सी पुस्तक में अङ्कित करने का मैंने दुःसाहस किया है।

अपज्ञता के कारण, सम्भव है मैं गुरुदेव के आशय को समझ न सका होऊँ और कोई त्रुटि रह गई हो तो उसका दायित्व मुझ पर है। वह मेरा ही दोष है, और जो कुछ सौंदर्य इस पुस्तक में दिखलाई दे वह सब गुरुदेव के ज्ञान पुष्प का परिमल है।

मैं पाँच पाद विभूषित पण्डित रत्न मुनि श्री समुद्र विजय जी महाराज और विद्या रसिक, विचक्षण मुनि श्री जनक विजय जी महाराज का अत्यन्त आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा और अनुकम्पा ने मुझे यह 'बल्लभ - वाणी' थाप तक पहुँचाने में समर्थ बनाया।

यदि इस पुस्तिका से जनता का यत् किंचित् हित साधन हो सका तो मैं अपना श्रम सार्थक समझूँगा।

शान्ति - भवन  
पिनलौदा C I

विनीत—  
चन्द्रगुप्त भारतीय

# आशीर्वचन

इसके समाहक और संपादक महोदय, वैद्य विरारद राजवैद्य पीएचड चन्द्रगुप्त जी भारतीय -याचतीर्थ, शास्त्री, साहित्य रत्न ने ब्रह्मा एवं भक्ति से जगत्प्रसिद्ध, सर्वशास्त्र निर्णायक, वायान्मो निधि, जेनाचार्य १००८ श्रीमद्विजयानन्द सूरेश्वरजी ( आत्माराम जी ) महाराज के पट्टधर, अज्ञान-विमिर तरुण, कलिनाल कल्पतरु, पञ्चाय केसरी, परमगुरुदेव आचार्य १००८ श्रीमद्विजयवल्लभ सूरेश्वरजी महाराज के इस वर्ष के चातुर्मास के व्याख्यान संग्रह किये, उन्में में यत्नरूप " आगोष्ठ रत्न " चुन चुन कर उाही माना बना कर के आपके कण्ठ को सुशोभित कर रहे हैं ।

आशा है कि आप सर्वेश्वर इलको अपने कण्ठ में धारण कर अपनी आत्मा का हन्याण करके भारतीयजी के परिश्रम को सफल बनायेंगे ।

धीकानेर  
२६-१०-४८

श्री परमगुरुदेव का चरण किरर  
समृद्ध विजय

# वल्लभ - वाणी

## आत्मा और धर्म

[ १ ]

मैं आप लोगों से पूछता हूँ—“आपका धर्म क्या है ?”

क्या जैन, वैष्णव, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम आदि आपके धर्म हैं ? नहीं ! ये आपके धर्म नहीं ! आपका धर्म वही है जो आत्मा को पतन से उठावे । ( १ )

[ २ ]

भगवान ने स्वयं इंद्र के सहयोग को अस्वीकार करके आपको स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाया है । ( २ )

[ ३ ]

आत्मा दिव्य स्वरूप है । उस पर पर्दा आया हुआ है । उस पर्दे के हट जाने पर स्वयं ही प्रकाश हो जाता है । ( ३ )

[ ४ ]

शुद्धात्मा ही सच्चिदानन्द ब्रह्म है । ( ४ )

[ ५ ]

महात्माया का शरीर परापरारम्भय दाना है। वहीन सुगार के क-याग के जिये अपनी गार को जोरिम में डालना अपना पर्वेय समझा है। (५)

[मशाला गंधी का बसिन्धु इरवा-रगत उदाहरण है। सनादक।]

[ ६ ]

मिश्रान्दृष्टि घर्म के नाम म धाया पहुँचाना है और राम दृष्टि घर्म के नाम म मरुद दगा है। (६)

[ ७ ]

जो जीव तरणार होता है, उसे थोटा मकित से ही लाभ हो जाता है। (७)

[ ८ ]

आत्मा की एक मरीची दशा रहना ही गुण है। इस मुख का अन्त नहीं। (८)

[ ९ ]

मैं पूछता हूँ आप श्वासोच्छ्वास मे क्या गुण मानत हैं ? क्या उममे कोई सगीत सुनने हैं ? क्या उसमे कोई नदक देखने को मिलता है ? फइ गध अती है ? रस

खरने को मिलता है या सुगन्ध स्पर्श का अनुभव होता है ?  
इसमें क्या सुख है ?

श्वामोन्द्ध्रुधाम में जो विलक्षण सुख है वह याणी द्वारा  
कहा नहीं जा सकता । इस जगती में ऐसी कोई वस्तु नहीं है,  
जिससे इससे सुख की तुलना की जा सके ।

सुख की उपा जग में नहीं ।

केवल धानी मरे न कही ॥ ( ६ )

[ १० ]

एकत्र भावना से स्त्रायलम्बन का पाठ सीला जाता है ।  
किमी के भरोसे रहने की जरूरत नहीं । अपना काम स्वयं  
करना होगा । ( १० )

[ ११ ]

सर्व जीव अपने आत्म धल से जो चाहे वह शक्ति पैदा  
कर सकते हैं । दूसरे के भरोसे रहना योग्य नहीं । ( ११ )

[ १२ ]

धर्म के हलके में रहने से फोड़ धाल भी धाना नहीं कर  
सकता । ( १२ )



[ १३ ]

आत्मा नि य है । इसलिये आत्मा से ही आत्मा का प्रेम  
होना चाहिये । ( १३ )

[ १४ ]

आत्मा ही ध्यान, ध्याना और भय है । ये जुटा जुटा  
हीवर एक हो जायगे— तो आत्म स्वरूप का प्राप्ति होगी ।  
इस त्रिपुटी का एक होना ही आत्म कल्याण है । ( १४ )

[ १५ ]

जब आत्मा वातराग देव की शरण लेता है— तब सब  
प्रकार के कष्ट से छूट जाता है । ( १५ )

[ १६ ]

परार्थ निष्ठा छोड़ो, इसी में आत्म कल्याण है । ( १६ )

[ १७ ]

पैसे वालों का पैसा तो खर्च होगा । यदि पैसे वाला  
धर्मात्मा हुआ तो धर्म में और पापात्मा हुआ तो पाप में । ( १७ )

[ १८ ]

मदत्ता लोग दूसरा के कल्याण के लिये अपनी आत्मा

को संकट में डालते हैं। (१८)

[ १९ ]

धर्म, प्रेम और श्रद्धा का विषय है। प्रेम और श्रद्धा होते धर्म में कोई रुकावट नहीं। (१९)

[ २० ]

धर्म का पहचानने वाला ही न्याय कर सकता है। (२०)



## ज्ञान

[ २१ ]

हमारे घरों से ज्यादा विद्वान् नहीं निरुचते । क्योंकि हम विद्या की कृपा नहीं करते । ( १ )

[ २२ ]

तुम भी बदरवान तो अशुभ हो । पर कृपा करते हो धन की । ज्ञान की नहीं । ( २ )

[ २३ ]

कमाऊ बेटे पर जैसे आपका प्यार ज्यादा होता है- उसी प्रकार अधिक बुद्धिमान ( ज्ञानी ) छात्र पर गुरु की कृपा अविन रहती है । ( ३ )

[ २४ ]

अभ्यास करते रहने से ही विद्या टिक सकती है । ( ४ )

[ २५ ]

ज्ञानान को मादी दी जाती है । ( ५ )

[ २६ ]

सुरा चाहने वाले को विद्या कहाँ, और विद्या चाहने वाले को सुरा कहाँ ? ( ६ )

[ २७ ]

विद्या पाठे और द्रव्य गाठे । ( ७ )

[ २८ ]

दुःख ज्ञानी को ही होता है, अज्ञानी या मूर्ख दुःख नहीं मानता । ( ८ )

( कदाचित्त है— समझार की सौत है । सम्पादक । )

[ २९ ]

ज्ञानद्वार बचपन से ही बुद्धिमान होते हैं । ( ९ )

[ ३० ]

सब बुद्धि का खेल है । ( १० )

[ ३१ ]

पढ़े लिखे बराबर भी होते हैं । पर, बुद्धि अलग अलग होती है । ( ११ )

[ ३० ]

यदि सोचा जाय तो महात्मा गांधी की बुद्धि परिणामिकी थी। वे ऐसे व्यक्ति थे जो परिणाम सोच लिया करते थे। वही भी उलभन पैदा होती थी तो महात्मा गांधी भट सुलभा दते थे। आज वैसा नेता कोई भी नहीं है। ( १२ )

[ ३३ ]

ससार में बुद्धिमानों की कमी नहीं है। पर, दुनियाँ महात्मा गांधी की बुद्धि पर मुग्ध थी। तभी न सारी दुनियाँ ने महात्मा गांधी को मान दिया। ( १३ )



## दान

[ ३४ ]

महाराज ! मुझे चौथी राणी की भक्ति से प्रसन्नता हुई । उसने मुझे सदा के लिये अभयदान दिया । उसके यहाँ थ्यपि राग रग नहीं हुआ, भोजन भी सीधा सावा मिला, पर, उममे जो स्वाद था, जो रस था, वह उन पकवानों में न था । मुझे इस माता का भोजन अमृत से भी उत्तम लगा । ( १ )

[ ३५ ]

अभयदान देकर ससार के प्राणियों की रक्षा करनी चाहिये । ( २ )

[ ३६ ]

दान का वास्तविक अर्थ है— पदार्थ पर से अपनापन हटा लेना । ( ३ )

[ ३७ ]

जिसे देकर हृदय में फण्णा पैदा हो, ऐसे दुखी के

दुःख को निवारण किया जाय— यह अनुकम्पा दान है। (१)

[ ३८ ]

सुपात्र को दान देते समय जो भावना होती है, उससे निर्जरा होती है। रूढ़ को दान देते समय जो भावना होती है— उससे पुण्य बंध होता है, यावत् मुक्ति की प्राप्ति होती है। (५)

[ ३९ ]

अनुकम्पा दान या करुणा दान सार्वजनिक दान है। (६)

[ ४० ]

जब वर्षा होती है, तब यह ऊँची नीची, गद्दी खन्ध आदि सब जगह में गिरती है। जमीन के अनुसार फल होता है। (७)

[ ४१ ]

जो धन न दान में दिया जाय न भोग में लिया जाय— उससे नाश रूप तीव्र गति अनश्वमेष होती है। (८)

[ ४२ ]

दे गया सो ले गया। खा गया सो खो गया। गाड़ गया मरुत मार गया। (९)

[ ४३ ]

भित्तारी या रंक आपके दरवाजे पर आकर पुकार करता है, तब वह आपको एक शिक्षा देता है। यह कहता है कि—  
 “ हमने पुण्यार्जन नहीं किया। उससे हमारी यह दशा हुई है। यदि तुम भी गरानों पर न्या नहीं करोगे तो तुम्हारी भी यही नशा होगी। हम ठीकरा लेकर घर घर फिरते हैं, इसी प्रकार तुमको भी फिरना होगा। ( १० )

[ ४४ ]

याचक को दान देने से कीर्ति पुष्ट होती है, व धुआँ को दान देने से स्नेह पुष्ट होता है और सुपात्र को दान देने से वर्म पुष्ट होता है। दान निरर्थक नहीं जाता। ( ११ )

[ ४५ ]

शील तप और भावना अपने आप के लिये लाभप्रद हैं, परन्तु दान का फल देने वाले और लेने वाले दोनों को प्राप्त होता है। ( १२ )

[ ४६ ]

हिंसा से परिपूर्ण गृहस्थ का घर पाप से परिपूर्ण है। पर, उसके घर से एक दुर्द्धा अतिथि को मिल जाता है—



वही गृहस्थ के सत्र अपरा में को माफ करा देता है । ( १३ )

[ ८७ ]

यह नहीं समझना चाहिये कि हम दुखियों के दुख दूर करेंगे तो हमें भी इसी प्रकार दुखी हो कर बदला मिलेगा । बल्कि इसके प्रभाव से हम दुखी ही नहीं होंगे । ( १४ )

[ ४८ ]

कजूस विचार नहीं करता कि पूर्व जन्म के पुण्य से ही सद्गमो प्राप्त हुई है । यदि तू इसे धेद करेगा तो यह रुठ कर चली जायेगी और फिर नहीं आयेगी । ( १५ )



## शील या ब्रह्मचर्य

[ ४६ ]

ब्रह्म— अर्थात् आत्म-तेज— आत्म-स्वरूप— उसका सेवन करना, यह ब्रह्मचर्य है। उस तेज का नाश करना कुशील है। विषय-वासना से ब्रह्मचर्य की हानि होती है। ( १ )

[ ५० ]

जैसे तरुणर विना मूल के नहीं टिक सकता और गुण ( रस्सी ) विना तीर नहीं चल सकता— उसी प्रकार शील सब व्रतों का मूल है। शील नहीं तो सब व्रत व्यर्थ हैं। शीलरूप गुण नहीं तो कियारूप कमान किस काम की ? ( २ )

[ ५१ ]

आत्मा का पर-परिणति का त्याग निश्चय-ब्रह्मचर्य है। ( ३ )

[ ५२ ]

गुरुओं के पास रह कर पठन-पाठन द्वारा आत्मस्वरूप

को प्रकट करना ब्रह्मचर्य है । ( ४ )

[ ५३ ]

ब्रह्मचर्य रहा तो सारे व्रत रहे । यदि इस व्रत में लामी रही तो सब में लामी आ जायगी । ( ५ )

[ ५४ ]

ब्रह्मचर्य व्रत के खण्डन से पाँचों व्रतों का खण्डन हो जाता है । ( ६ )

[ ५५ ]

शील के प्रभाव से सुदर्शन थमर हो गये । ( ७ )

[ ५६ ]

ब्रह्मचर्य ही के प्रभाव से मुक्ति की प्राप्ति होती है । ( ८ )

[ ५७ ]

ब्रह्मचर्य विभाव अवस्था को छुड़ा कर स्वभाव अवस्था को प्राप्त कराने वाला है । ( ९ )

[ ५८ ]

शील पाचना महान कठिन है । जवाना में इसका पालना

कठिनतर है। धनवानों का शील पालना कठिनतम है। हजारों में कोई एक भाग्यवान शील पाल सकता है। (१०)

[ ५६ ]

धामना में चशीभूत व्यक्ति बहमी होता है। (११)

[ ६० ]

किपाक फल देखने में सुन्दर, खाने में मीठे और परिणाम में प्राणहारक होता है— उसी प्रकार विषय देखने में सुन्दर, भोगने में मीठे और परिणाम में भयकर होते हैं। (१२)

[ ६१ ]

विषय से विषय अधिक ज़हर वाले हैं। (१३)



तप

[ ६० ]

किसी अपराध का शूली का शूल हो जाना तप का प्रभाव है । ( १ )

[ ६१ ]

धीतराग देव ने हमको एक जड़ी दी है । हम जड़ी को सूँघ कर एक भयकर नाग और पाँच नागिनें मर जाती हैं । वह जड़ी है तप । ( २ )

[ ६४ ]

तप रूप जड़ी से मन रूप भुजङ्ग और पाँच इन्द्रियाँ रूप नागिनें मर जाती हैं । ( ३ )

[ ६५ ]

तपस्या से काम पर काबू पाया जा सकता है । ( ४ )

[ ६६ ]

शक्ति होते हुए भी साधु साध्वी, शष्टमी, चतुर्विंशती या

अपवास न करें तो प्रायश्चित्त आना है। (५)

[ ६७ ]

यथाशक्ति तपस्या तो करनी ही चाहिये। पर तपस्या में घुमा धारण करना अत्यन्त आवश्यक है। (६)

[ ६८ ]

ऊणोदरी तप हर एक से नहीं होता। स्वादिष्ट वस्तु खाने आ जायगी तो दो मास कम नहीं खाँगे, घण्टिक व्यादा ही खाने में आयेंगे। (७)

[ ६९ ]

कम खाओगे तो शरीर की स्थिति व्यवस्थित बनी रहेगी। (८)

[ ७० ]

सिर्फ शरीर को सुखाने का नाम ही तप नहीं है। शरीर के साथ जो अपराध करने वाले रागद्वेष हैं— उनको सुखाने की जरूरत है। (९)

[ ७१ ]

भ्रमु की आँखा के बाहर का तप— तप नहीं, केषल

शूलों मरना है । ( १० )

[ ७० ]

घोर पुरुष आत्मिक धर्म के लिये ही घोर तप करते  
हैं । ( ११ )

[ ७१ ]

संयम और आशान जबरदस्ती किसी के गले मंदा नहीं  
जा सकता । ( १२ )



## भावना

[ ७४ ]

निर्मल भावना से पाप वसी प्रकार छूट जाता है, जैसे निर्मल जल से मैल । ( १ )

[ ७५ ]

फल भावों का मिलता है क्रिया का नहीं । ( २ )

[ ७६ ]

परिणामों के चढ़ाव से अंतर मुहूर्त में केवल ज्ञान की भी प्राप्ति हो सकता है । ( ३ )

[ ७७ ]

जो जीव अच्छा होता है, उसकी भावना अच्छी होती है । पर, दुष्ट जीवों की भावना दुष्टता की ओर होती है । ( ४ )

[ ७८ ]

भावना के अनुसार फल की प्राप्ति होती है । ( ५ )



[ ७६ ]

हाथ जोड़ना, घ दन करना, पाठ बोलना आदि  
घ दन दे, भावों की शुद्धि भाव घ न्न है । ( ६ )

[ ८० ]

भावना का ही साथ खेत है । ( ७ )

[ ८१ ]

परिणामा के चलायमान होने से जीव दुर्गति  
अधिनारी होता है । ( ८ )

---

## साधु

[ ८२ ]

यथार्थ बात को कोई नहीं कहता । तुम्हारा साधु लिहाज करते हैं— और तुम साधु का । यही कारण है कि सुधार नहीं होता । जहाँ “ तिन्नाण तारयाण ” था वहाँ अब “ डु-याण होवियाण ” हो गया । ( १ )

[ ८३ ]

आज यदि कोई श्रावक साधु को कहे कि— महाराज ! थाप अमुक गलती कर रहे हैं तो साधु का बश चले तो डण्डा लेकर पीछे लग जायँ । साधु नहीं सोचते कि हम में अवगुण हैं तो उसको सुधारें । ( २ )

[ ८४ ]

साधु न तो किसी को थाप देता है और न किसी को बरदान ही । ( ३ )

[ ८५ ]

एक समय मेरे जैसे खाऊ लोग साधु नहीं बने थे । आज

हम रोग दिन भर चरते रहते हैं । सुबह दूध पारता चाहिये । १० घंटे भोजन होगा । दोपहर में फिर नारता और शाम को भोजन के बिना काम नहीं चलता । इस प्रकार आज के हम साधु लोग अन्न के कीड़े हो रहे हैं । ( ४ )

[ ८६ ]

साधु साधु के, साध्वी साध्वी के आपस में नहीं धनती, मानों जायदाद का घँटारा हो रहा हो । ( ५ )

[ ८७ ]

कपाय से अभिमान की वृद्धि होती है, इसी से गड़बड़ी हो रही है । ( ६ )

[ ८८ ]

बिना मोचे समझे मोह यश चले बना लेना क्या उचित है ? जैसे आपसो स तान का मोह होता है, वैसे ही हमको आन चेता का मोह है । ( ७ )

[ ८९ ]

अयोग्य साधुओं को दरज कर ही आन कल पढ़े लिखे एव समझदार व्यक्तियों की हम में अट्टा बहुत कम रह गई

हे । पर, इस पर विचार करें कौन ? ( ८ )

[ ६० ]

जब से साधु नगर में उतरने लगे तब से गृहस्थों से संस्तर परिचय बढ़ने लगा । ( ९ )

[ ६१ ]

साधु साध्वी प्रतिव्रमण न करे तो दृष्ट आता है । ( १० )

[ ६२ ]

जहाँ भक्ति विज्ञेय हो जाती है— वहाँ निर्नेय वस्तु, पात्र और आहार पानी का मिलना साधुओं को फटिन हो जाता है । ( ११ )

[ ६३ ]

क्रोध, मान, माया और लोभ हटाने से ही साधु बनता है । केवल वेश धारण करने से नहीं । ( १२ )

[ ६४ ]

साधु साध्वी को खयाल करना चाहिये कि धर्म के नाम

पर हम को दुकडे मिल रहे हैं। यदि हम ये दुकडे खाकर  
पम न करेंगे तो हमें भ्रूच का पाड़ा बनना पड़ेगा। ( १३ )



## साम्य भाव

[ ६५ ]

स्वर-मण्डल या संगीत के साथ यदि ऋषि लोग दोनों भाषाएँ बोलते हैं तो यह प्रशस्त है। यदि कोई संस्कृत की निंदा करे और प्राकृत को ऊँची चढ़ावे या प्राकृत की निंदा करके संस्कृत को ऊँची चढ़ावे तो यह शास्त्राज्ञा के बाहर है। (१)

[ ६६ ]

आज जैसी वाढ़ा धड़ी पहले नहीं थी। एक घर में चाहे १० मत होते, तो भी सासारिक प्रेम उनका एक सा रहता था, घर्म और मान्यता चाहे जुदी हो। (२)

[ ६७ ]

महाराज तो आज हैं- फल नहीं। चौमासा पूरा हुआ कि अपना बिस्तर गोल करके चले जायेंगे। तुम को संघ में रहना है। फिर लड़ाकड़ी क्यों करते हो। (३)

[ ६८ ]

नाहक लड़ लड़ कर धर्म को लज्जित कर्या करत हो ।  
भगड़ा प्रेम को तोड़ देता है । ( ४ )

[ ६९ ]

हृदय में अज्ञानता के घादल छाये हैं- जब तक जोरदार  
पवन न चले, हृदय का अधकार नहीं मिट सकता । ( ५ )

[ १०० ]

जो शोग धैर धिरोव को भूल कर आत्मा को पवित्र कर  
लेते हैं, वे धय हैं । ( ६ )

[ १०१ ]

यह \*त्रिपदी सभार को समस्त समस्याओं को हल करने  
का एक मात्र साधन है । ( ७ )

[ \* उत्पाद, विनाश और धीव्य वाले सभार के सब पदाय हैं ।  
अपेक्षावाद से सब की बातों को आदर देने से सब भगड़े शा त ह  
छफते हैं । ]

[ १०२ ]

आप उन रागद्वेष को जीवने वाले धीतराग के भक्त

कहलाते हो, फिर आप स्वयं रागद्वेष के चक्र में आते रहोगे तो क्या यह उचित कहा जायगा । ( ८ )

[ १०३ ]

जिसका हृदय उदार होता है, वह रागद्वेष से रहित होता है । इसलिये वह महावीर या सच्चा अनुयायी माना जाता है । ( ९ )

[ १०४ ]

जीनों में धर्म और गुरु का बँटवारा हो गया । देव का नहीं । ( १० )

[ १०५ ]

तुम अपने अपने आचार व्यवहार अलग अलग रखो पर भगवान के कण्ठों के नीचे एक होकर रहो तो दुनियाँ में प्रभाव पड़े । ( ११ )

[ १०६ ]

जदा घादप्रियाद हो वहा धर्म का रहना कठिन है । ( १२ )

[ १०७ ]

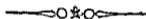
वीतराग देव का धर्म त्याग का है । लोग एकान्त पक्ष



लेकर घर्म का नारा कर रहे हैं और फिर भी घपने को स्याद्वादी  
फहते हैं । ( १३ )

[ १०८ ]

घर्म की रक्षा के लिये वैर विरोध को छोड़ कर एक हो  
जाओ । ( १४ )



## विनय

[ १०६ ]

जिसने अभिमान का त्याग कर लिया वही विनय कर सकता है। जिसका हृदय अभिमान से भरा हुआ है— वह भला क्या विनय करेगा ? ( १ )

[ ११० ]

विनय मूल ही घर्म है। ( २ )

[ १११ ]

विनय अन्तरङ्ग तप है। जहाँ विनय नहीं वहाँ घर्म या तप नहीं। ( ३ )

[ ११७ ]

त्रिद्यागुरु ( गृहस्थ ) को आते देर कर यशोविजयजी महाराज व्याख्यान के पाठ से छठ बैठे और नीचे आ गये। यह विनय है। ( ४ )

[ ११३ ]

सासारिक या धार्मिक कोई भी विद्या विनय गुण के बिना नहीं आती। ( ५ )

[ ११४ ]

जिससे घाचना ली जाय उसका विनय करना जरूरी है चाहे वह छोटा हो या बड़ा। ( ६ )

[ ११५ ]

बिना यत्न आदि क्रिये घाचना लेना ध्यान की आशा तना है। ( ७ )

[ ११६ ]

पुराने जमान में शिष्य भी आक्षेपकारी होते थे। राजाका चाहे टल जाती, पर गुरु आक्षा कभी टाली नहीं जाती थी। ( ८ )

[ सभी तो सुन्धी थे। उभ्यादक। ]

[ ११७ ]

छोटे को बड़ा समझे इसका रहस्य यह है कि बड़े को अभिमान न आवे। ( ९ )

[ ११८ ]

सब साधु बन्दनीक हैं। आप लोग “ नमो लोए सद्य साहूण ” बोलते हो। इसमें आचार्य भी सबसे छोटे साधु या साध्वी को नमस्कार करते हैं। क्या आचार्य नमस्कार मन्त्र नहीं बोलते ? ( १० )

[ ११६ ]

भाई। तेरा पुण्य ऊँचा है तो तू आचार्य बना। फिर, विनय-गुण को क्यों छोड़ता है। ( ११ )

[ १२० ]

जब आचार्य छोटे को खमाता है तो छोटे के मन में यह खयाल नहीं रहता कि “ मैं तुम्ह हूँ। ” यह भी आचार्य की तरह सब को खमाता है और आचार्य से विनय गुण सीख लेता है। ( १२ )

[ १२१ ]

आज ऐसी प्रवृत्ति चल रही है कि बड़े छोटे की परवाह नहीं करते। “ अबे तुवे ” टक बोलने लग गये हैं। ( १३ )

[ १२२ ]

जो लघु बन कर रहता है, वही को गौरव का पद मिलता

है। पर, जो घमण्ड में मस्त रहता है— उसे प्रभु मिलना कठिन है। ( १४ )

[ १३ ]

“ राजन् ! पानी पहाड़ पर नहीं चढ़ता। विद्या विनय के बिना नहीं आ सकती। आप इस चारुडाल को सिंहासन पर बिठलाइय और आप नाचे बैठिये, तब विद्या आ सकेगी। ” ( १५ )

[ १२४ ]

विनय सहित शास्त्र को पढ़ना आचार है और विनय रहित पढ़ना अविचार है। ( १६ )

[ १२५ ]

अपने वास्तविक गुरु का नाम न बतला कर अन्य प्रसिद्ध विद्वान् को अपना गुरु बता देना कुटिलता है। ( १७ )

[ १२६ ]

बिना रीति रिवाज जाने किसी के पास जाना उचित नहीं, फिर भी विनय गुण सब सिरा देता है। ( १८ )

[ १२७ ]

अभिमानि व्यक्ति कभी सीधी बात नहीं करता । ( १६ )

[ १२८ ]

अभिमान रावण जैसा न होना चाहिये । ( २० )

[ १२९ ]

विनयवान् शिष्य गुरु को आज्ञा को मान देना पसन्द करते हैं । ( २१ )

[ १३० ]

जहाँ अभिमान होता है वहाँ ज्ञान नहीं आता । ( २२ )

[ १३१ ]

अभिमान आ जाव तो तेजी आये विना नहीं रहती  
( २३ )

## सम्प्रदाय वाद

[ १३० ]

मूल भगवान महावीर हैं। हमने उनसे तो भुला दिया और गच्छहृषी शापाएँ पर ड लीं। आपस में जूतम्फारु शुरू कर दी, यहा तक कि यदि कोई जैन धर्म की निंदा करता होगा तो हम उस चिप घूँट को भी जायेंगे। पर, सम्प्रदाय या गच्छ की निंदा करता होगा तो ततयार टोकर बाहर मैदान में छट जायेंगे। ( १ )

[ १३३ ]

सभी सोचते हैं कि भगवान एक हैं— पर सम्प्रदाय और गच्छ का मोह नहीं छूटता। ( २ )

[ १३४ ]

ममत्व से ही रागद्वेष पदा होता है। रागद्वेष म्हाडे की जड़ है। धीतराग देव का भाग रागद्वेष करने का नहीं है। '३

[ १३५ ]

सह की उन्नति हो तो धर्म की उन्नति हो, धर्म की उन्नति हो तो तीर्थ की उन्नति हो, तीर्थ की उन्नति हो तो तीर्थद्वार के यवन की उन्नति हो । ( ४ )





## सङ्गठन

[ १३६ ]

एक तो एक और नौ से ग्यारह हो जाते हैं। बल बढ़ जाता है। ( १ )

[ १३७ ]

तारा के रत्न में 'एक' सबसे बढ़ा पत्ता माना जाता है— यह गुलाम, बेगम और बादशाह सब को जीत लेता है। क्या आपने इससे शिक्षा ली ? ( २ )

[ १३८ ]

आप लोग दूसरों की भूल निकालने का ठेका लेते हो परिणाम यह होता है कि न तो आप दूसरों की भूल निकाल सकते हो न आपकी दृष्टि अपनी भूलों पर ही जाती है। ( ३ )

[ १३९ ]

आप स्वयं अच्छी बात का आचरण करो। आपको देख आपकी आदर्श मान कर— दूसरे स्वयं मुघर जायेंगे

आपको सुधारने की जरूरत नहीं । ( ४ )

[ १४० ]

घात खरी भी हो तो भगड़ा करने वाला उसमें भी कोई न कोई खोट निकाल ही लेता है । ( ५ )

[ १४१ ]

जबरनती जिसे करना होती है उसे उल्टा रास्ता ही मूमता है । ( ६ )

[ १४२ ]

जो व्यक्ति दुकड़े करने वाले हैं वे निन्दा के और जोड़ने वाले आदर के पात्र हैं । ( ७ )

[ १४३ ]

दूसरों की नहीं— अपनी भूल सुधारने की आदत मालो । ( ८ )

[ १४४ ]

आत्मा के आदर का मैल निकाल कर हृदय शुद्ध हो जाय तो सम्प होने में देर नहीं लगती । ( ९ )

[ १४५ ]

बाप दादे योग्य थे तो ये पच थे। पर, ध्यान उनके अयोग्य लड़के भी अपना हक जमाते हैं— यही कारण है कि समान छूत्र गया। ( १० )

[ १४६ ]

अपने में काम करने की योग्यता न हो तो सब का काम सब को सौंप दो। ( ११ )

[ १४७ ]

लालु मति की रक्षा करना बहु मति का फर्ज है। ( १२ )

[ १४८ ]

सह में फाटा-पूटा है— इसीलिये पूटा है। ( १३ )

[ १४९ ]

हर एक काम में उत्तर मायक की जरूरत होती है। ( १४ )

[ १५० ]

सब विलों में हाथ न डालो— क्योंकि सब में चूहे नहीं रहते, किसी में से साँप भी निकल सकता है। ( १५ )

## स्वामी वात्सल्य

[ १५१ ]

' समान धर्म वाले की वात्सल्य करना स्वामी वात्सल्य है। (१)

[ १५२ ]

साधर्मि का निरादर स्वयं भगवान का निरादर है। (२)

[ १५३ ]

साधर्मि को भोजन करने वाले को सुपात्र को दान देने का लाभ होता है। (३)

[ १५४ ]

साधर्मि को केवल भोजन करा देना मात्र ही स्वामी-वात्सल्य नहीं है, पर, उनके अथ प्रकार के कष्टों को दूर करना भी स्वामी वात्सल्य है। (४)

[ १५५ ]

साधर्मी के यहाँ किसी उपवास आदि के कारण भोजन के लिये न जायँ तो बात जुदी है, पर, साधर्मी का घमण्ड के कारण अनादर करना स्वयं भगवान का अपमान करना है। (५)

[ १५६ ]

साधर्मी का परस्पर प्रेम बढ़ाने और धर्म की वृद्धि करने के लिये यह आवश्यक है कि एक दूसरे को निमंत्रण दे। (६)

[ १५७ ]

साधर्मी वात्सल्य तभी कहा जायगा— जब धनी और निधन का कोई खयाल न रखने हुए बरसलता की जाय। (७)

[ १५८ ]

मर्द कमजोरों को दीजाय, जोरावर को मर्द की जरूरत नहीं। समुद्र में कई नदियाँ जाती हैं। पर, वहाँ जाकर सब पानी अपेय हो जाता है। जहाँ पानी का अभाव हो वहाँ गहर चाय तो लहर हो जाय। (८)

[ १५९ ]

जिस प्रकार आप माता, बहिन और पुत्री की माल सम्भाल लेते हो— उसी प्रकार साधर्मी बहना की माल सम्भाल करनी चाहिये। (९)

## मन

[ १६० ]

ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ मन का प्रवेश न हो । ( १ )

[ १६१ ]

पहाड़ हो, समुद्र हो, नदी हो, नाला हो, आसना न हो या कोई भी कठिन से कठिन स्थान हो— मन सब जगह पहुँच जाता है । ( २ )

[ १६२ ]

काम का नाम मनोभव है । वह मन के संकल्प के साथ ही उत्पन्न हो जाता है । ( ३ )

[ १६३ ]

यदि काम से घचना हो तो मन में संकल्प ही न करो, विचार या ग्यथात छोड़ दो । ( ४ )



## माया

[ १६४ ]

पुरुष माया करता है तो स्त्री धनता है । स्त्री माया करती है तो उसे हिंजड़ा धनना पड़ता है । ( १ )

[ १६५ ]

साधर्मि के साथ छल ( माया ) करना स्वयं भगवान को ठगना है । ( २ )

[ १६६ ]

कपटाई करने से अनन्त संसार उत्पन्न होता है । ( ३ )

[ १६७ ]

किमी की अमानत में शयात करना बुरा पाप है । ( ४ )

[ १६८ ]

छोटे बालक निरूपण होते हैं । ( ५ )

[ १६६ ]

घट्टों का हृदय निर्दोष होता है। उसको जिस रग में  
रंगना चाहो रग लो। ( ६ )





## वणिक बुद्धि

[ १५० ]

महात्मा गांधी की तरह वणिक बुद्धि वाले मारी दुनियाँ को जीत लेते हैं । ( १ )

[ १७१ ]

रायण के राज्य में कहा जाता है— कोई धनिया घनीर नहीं था । इसी से उस जैसे शक्तिशाली राजा का राज्य भी नष्ट हो गया । ( २ )



## कथा और कथाकार

[ १७३ ]

जो द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव को जानन वाला होता है, वही धर्म कथा करने का अधिकारी है— हर एक व्यक्ति धर्म कथा नहीं कर सकता । ( १ )

[ १७३ ]

दुनियाँ में बिगाड़-न हो तो सुधार और उपदेश की जरूरत नहीं । ( २ )

[ १७४ ]

जिस कथा के सुनने से भाव ठीक हों वह सुकथा है और जिसके सुनने से अयर्म की ओर प्रवृत्ति हो वह विकथा है । ( ३ )

[ १७५ ]

सोता जिस भावना वाला होगा वह उसी भावना के अनुसार श्रव्य विषय को अपनावेगा । ( ४ )

[ १७६ ]

त्रिमुख का पहले भ मुख्य लाना पढता है । त्रिमुख व्यक्ति धम का आराधन नहीं कर सकता । ( ५ )

[ १७७ ]

जाने वाला अभव्य हो तो उसे तीर्थद्वार भी नहीं समझ सकते । ( ६ )

[ १७८ ]

जिस प्रकार बालों द्वारा बरसाया हुआ जल भिन्न भिन्न श्रृंगों और भिन्न भिन्न वृक्षों में भिन्न भिन्न परिपाक और स्वाद का प्राप्त होता है, वसी प्रकार भगवान की बाणी भी पुरुष त्रिगुण को पा कर भिन्न २ रूप धारण करती है । ( ७ )

[ १७९ ]

पहले पहल जीव धर्म में तभी आकर्षित होता है— जब उसको कथा सुन कर उल्लास होवे और उल्लास वय होता है, जब उसको अपनी जरूरत का ज्ञान प्राप्त होवे । ( ८ )

[ १८० ]

त्रिम कथा से आत्मा को बुद्ध न बुद्ध लाभ होवे उसे

धर्म क्या कहते हैं । ( ६ )

[ १८१ ]

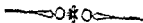
जन्म, जरा, मरण, भय, व्याधि, वेदना आदि म निन  
पर वचन ( धर्म-कथा ) के सिवाय कोई शरण देने वाला  
नहीं । ( १० )

[ १८२ ]

आँवलों का खाना और बड़ों का कहना पीछे मीठा  
सगता है । ( ११ )

[ १८३ ]

धर्म सिद्धांतों का होता है, क्रिया कार्यों का नहीं । ( १२ )



## कर्म

[ १८४ ]

कृत कर्मों का छुटकारा नहीं होता । ( १ )

[ १८५ ]

जिस प्रकार सूर्य पर से घादल हट जाते हैं तो प्रकाश हो जाता है, उसी प्रकार कर्मों के हट जाने से ज्ञान हो जाता है । ( २ )

[ १८६ ]

आत्मा उपाधियों ( कर्मों ) से दूर करके स्वधर्म में आता है । स्वधर्म में आना ही आत्मा का उद्धार है । ( ३ )

[ १८७ ]

सत्य, रज, तम रूप गुणों ( कर्मों ) से रहित आत्मा ही परमात्मा बन जाता है । ( ४ )

[ १५८ ]

भारी कर्मी जीव हठीला होकर न जाने क्या-क्या व्यवहार करने लगता है। (५)

[ १५९ ]

उप, तप, तितिक्षा आदि विद्या द्वारा कर्म की उपशान्ति करके आत्मा को निर्मल किया जा सकता है। (६)

[ १६० ]

जीव को कोई शरण देने वाला नहीं। अपना शुभ प्राप्त ही कर सकता है। अपनी रक्षा आप करने में समर्थ है। (७)

[ १६१ ]

आत्मा स्थितना ही भारी कर्म सा करने वाला हो, पर, निमित्त मिलता है तो स्थितना ही जाता है। (८)

[ १६२ ]

जो मनु आगे जाकर मुग्धगयो हो— उसके लिये पहले बुद्धि उठाना अनुचित नहीं। (९)

[ १६३ ]

बिना बिगारे छिये गये काम ११ शक्य नै कर मर  
धनकता रहता है । ( १० )

[ १६४ ]

होनहार पाठ पहल मुँह पर आ जानी है । ( ११ )

[ १६५ ]

जय हुन गिय का जोर होता है तो बिगारे पर आवा  
बहाज भी रूप जाता है । ( १२ )

## कुमति और सुमति

[ १६६ ]

आत्मा की दो सखियाँ हैं एक कुमति, एक सुमति ।  
कुमति छोटी बुद्धि का नाम है और सुमति अच्छी बुद्धि को  
बहते हैं । ( १ )

[ १६७ ]

जब आत्मा कुमति का साथ करता है— तो वह उसको  
चुरी चुरी बातों में प्रवृत्त करती है और जब सुमति को साथ  
लेता है— तब उसे अच्छे अच्छे सत्कर्म दिखालाई देते  
हैं । ( २ )

---



## काल चक्र

[ ११८ ]

एक दिन मदा किसी का नहीं रहता । समय के प्रभाव में घना निर्धन और निर्धन घातमान हो जाते हैं । कम ही जो, सत्ता गिरा राधा धे, आज वे ठोकरें मारने फिरते हैं । ( १ )

[ ११९ ]

यह संसार चक्र सदा बदल बदल होता रहता है । जे मोह की पीडना है ममता तबपर ऊँचा जाता है । ( २ )

[ १२० ]

संसार बिशेष पासा है । ( ३ )

[ १२१ ]

जगत की सब वस्तुएँ कुछ भंगुर हैं । इनसे प्रेम करने जानना का पुकसान करना है । ( ४ )

[ १२२ ]

नाथ समार के हम स्वरूप की समस्त नाथ ही विरक्त हो जाय । ( ५ )

## क्रिया

[ २०३ ]

कोई भी क्रिया निरस्त नहीं होती । मानना के अनुसार क्रिया का फल अवश्य होता है । ( १ )

[ -२०४ ]

यह नहीं समझना चाहिये कि एक व्यक्ति को जिससे आराधन से लाभ हो गया, दूसरे को भी केवल उसी से लाभ होगा, किन्ती दूसरी क्रिया से नहीं । ( २ )

[ २०५ ]

दुनियाँ में एक रोग हो तो एक ही दवा से काम चल जाय । पर, जब रोग भिन्न भिन्न हैं, तो दवाएँ भी भिन्न भिन्न आवश्यक हैं । इसी तरह कर्म रोग अनेक प्रकार के हैं, इसलिये धार्मिक क्रियाएँ भी भिन्न भिन्न हैं । ( ३ )



## नर नारी

[ २०६ ]

स्त्रा और पुरुष भ से दोनों एक सरीखे धर्मात्मा हों ता उनका ससार चक्र ठीक चलेगा । धर्म की आराधना और प्रमाणा ठीक चलेगी । उनमें कमी कलेश— वैमनस्य नहीं हागा । दोनों धर्माराधन कर सकने हैं । (१)

[ २०७ ]

कभी घर की मरफार तारात न हो जाय, उमको राजी रखन के लिये आदमी सब कुद्र करता है । (२)

[ २०८ ]

राजा हो या शूद्र सब स्त्रा के वश भ होत हैं । (३)

[ २०९ ]

साधमी पुरुष ही नहीं, परंतु स्त्रियाँ भी हो सकती हैं । (४)

[ २१० ]

स्त्री जब तक देवी है— तब तक यह देवी है— नर्त्तकी  
 स्वरूपा है। उसमें भलमनसाहत, सदाचार और त्याग है—  
 तभी तक यह देवी है। स्वयं शिरती है— दूसरा को तारती  
 है। (५)

[ २११ ]

स्त्री जब अपने स्थान से भ्रष्ट हो जाती है— तब यह  
 काली बन जाती है। देखिये फिर उसका तमाशा। स्वयं  
 मरती है, औरा को मारती है। (६)

[ २१२ ]

द्वियाँ ही नीच नहीं, पुरुष भी नीच हो सकते हैं।  
 महात्मा गांधी की हत्या करने वाला कौन था ? स्त्री या  
 पुरुष ? तेमै महापुरुष का नाश करने हुए उस नीच का शर्म  
 न आई ! (७)

[ २१३ ]

माता और पिता का हक बराबर है। (८)

[ २१४ ]

मा को पति का पूरा प्रेम न शीघ्र तो बिना राम का मरण है। ( ६ )

[ २१५ ]

गर्भ का जीव मा बाप के लिये सुरक्षायी होगा या दुःख जायी— यह पता उसके गर्भ में आने ही बन जाता है। ( १० )

[ २१६ ]

स्त्रियाँ अपने पति के लिये प्राण तक देने को तैयार हो जाती हैं— अतः पुरुषों का भी कर्तव्य है कि वे उनके सुख दुःख का ध्यान रखें। ( ११ )



## परीक्षा

[ २१७ ]

इम्तिहान में जो पास होता है, उसी का नाम आगे आता है। (१)

[ २१८ ]

इम्तिहान लेने वाला ऐसे सवाल निरालता है कि जिस से इम्तिहान देने वाला नापास हो जाय। पर, यदि उसी की परीक्षा ली जाय तो शायद वह भी नापास हो जाय। (२)

[ २१९ ]

किताबी से सवाल निकाल कर दूसरों पर थोका डाल देना आसान है— पर, स्थय करना कठिन है। (३)

---

## प्रायश्चित्त

[ २२० ]

बच्चे की तरह निर्विकार होकर प्रायश्चित्त करने के लिये आलोचना करनी चाहिये । ( १ )

[ २२१ ]

भावना का परिवर्तन और पश्चात्ताप ही सच्चा प्रायश्चित्त है । ( २ )

[ २२२ ]

शुद्ध भाव से “ मिच्छामि दुक्कडं ” देने के बाद फिर उसी काम को नहीं करना चाहिये । ( ३ )



## विविध-विचार -

[ २२३ ]

जो वस्तु पूज्य भाव प्रदान करती है— उसकी पूजा की जाती है। ( १ )

[ २२४ ]

सब कोई सहारा नहीं होता है— तब एक मात्र परमात्मा का सहारा ही सहायक होता है। ( २ )

[ २२५ ]

महापुरुषों के केवल नाम लेने से काम नहीं चलता। हमें भी उनके अनुसार अपनी आत्मा का दमन करना चाहिये। ( ३ )

[ २२६ ]

अपने घर की हैसियत के अनुसार स्वर्च करना चाहिये। ऐसा न हो कि घर की गद्द के गहने बिक जायँ और घर को भी रहन रखना पड़े। ( ४ )



[ २०७ ]

लोग नाक रखने के लिये सत्र बुद्ध करते हैं। मैं पूछता हूँ— हाथी से बड़ी नाक किसकी है ? इसमें क्या है ? इसमें मिट्ट और गन्दगी ही तो भरा रहता है ! आपने कभी गरीब गुरवों का खयाल किया ? ( ५ )

[ २०८ ]

धर्म, धर्म गुरु और धर्म प्रवर्तकों की निंदा करवाने वालों से बढ कर दुनियाँ में कोई भी बढा अपराधी नहीं होता। ( ६ )

[ २०९ ]

जब बढने का नम्बर आता है, तब अच्छी संगत हो जाती है। ( ७ )

[ २१० ]

घायी पाकर कौन खुश नहीं होता ?। ( ८ )

[ २११ ]

बुद्धिमान मनुष्य भीठी नजर से विधवा का पालन करते हैं— ताकि वह अपना दुःख भूल जाय। ( ९ )

[ २३० ]

पेट में खाड़ा हो तो ज्ञान ध्यान में मन नहीं लगता । ( १० )

[ २३३ ]

अपने अपने स्थान पर सब जोरावर हैं । ( ११ )

[ २३४ ]

जिसके ५ इन्द्रियाँ और ४ कषाय, इन ९ की हजामत हो जाय वही मुखिबत है । ( १२ )

[ २३५ ]

जहाँ साधु आश्रय लेता है— उसी स्थान को उपाश्रय कहते हैं यदि उसमें साधु की मनता हो तो फिर वह परिमद्ध हो जाता है । ( १३ )

[ २३६ ]

सरकार की आज्ञा न मान कर चोरी करे उसको सजा मिलती है न ? उसी प्रकार धर्म की सरकार की आज्ञा न मानने वाला दुर्गति में जाता है । ( १४ )

[ २३७ ]

गुरु आने पर लम्बा पड़ा रहना आशातना है। (१५)

[ २३८ ]

जहाँ सूर्य चमक रहा हो वहाँ कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति दीपक या बैट्री से काम नहीं लेता। (१६)

[ २३९ ]

साधु हो या गृहस्थ— दूरेपा में सत्कार करने वाले विरले हैं। (१७)

[ २४० ]

काल का मुँह काला होता है। (१८)

[ २४१ ]

बड़े आदमी जब धीच में गिर जाते हैं तब उपद्रव शात हो जाता है। (१९)

[ २४२ ]

दुनिया में काम प्यारा है काम नहीं। (२०)

[ २४३ ]

समोपशम वाले को उपयोग की जरूरत है। अपन

द्वयस्थ हैं। कोई द्वयस्थ कहे कि मैं मूल नहीं करता तो वह मिथ्यावादी है। (२१)

[ २४४ ]

धर तो कोई रहता नहीं। (२२)

[ २४५ ]

पुत्र तीन प्रकार के होते हैं। (१) सुपुत्र— जो अपने बाप के नाम को बढ़ावे। (२) पुत्र— जो अपने बाप के नाम को कायम रखे। (३) दुपुत्र— जो अपने बाप के नाम को बढ़ा लगावे। इसी प्रकार शिष्य भी तीन प्रकार के होते हैं। (२३)

[ २४६ ]

औरत, पुत्र, परिवार से आत्मा का कल्याण होने वाला नहीं है, आत्मा का कल्याण धर्म से ही होगा। (२४)

[ २४७ ]

मातृ-भक्त पुत्र सुदर विचार वाला होता है। (२५)

[ २४८ ]

यदि कोई बीमार या अनशन की हालत में किसी के

छोड़ कर चला जाय तो यह भगवान की आशा का विराध है । ( २६ )

[ २४६ ]

सम्यक्त्व रहा तो सब रहा । सम्यक्त्व गया तो सब गया ।

[ २५० ]

जिसको स्वयं राजा सम्मान दे, भला फिर प्रजा का तो पूछना ही क्या ? ( २८ )

[ २५१ ]

बच्चों में धर्म का प्रेम कुछ अधिक होता है । ( २९ )

[ २५२ ]

लक्ष्मी किसी भी दरवाजे से आवे वही ठीक है । ( ३० )

[ २५३ ]

मा बाप का मोह नहीं छूटता । ( ३१ )

[ २५४ ]

चित्त विक्र रहती है तो शरीर पुष्ट नहीं होता । ( ३२ )

[ २५५ ]

शुद्धात्मा ही सच्चिदानन्द ब्रह्म है । (३३)

[ २५६ ]

अवेरे में ही पापियों को मौक्त मिला करता है । (३४)

[ २५७ ]

हिम्मत बढ़ाने से पडती है । (३५)

[ २५८ ]

पीतराग देव के मार्ग में रिस्तेदारियों को महत्त्व नहीं दिया जाता । (३६)

[ २५९ ]

ऐसा काम हाथ में लो कि जिसे कोई न छुड़ा सके । (३७)

[ २६० ]

अपने पुण्य में भाग कौन दे ? (३८)

[ २६१ ]

अपना पाप आप जाने । कितना ही छिपाया जाय अन्दर को सटकता रहेगा । (३९)

[ २६२ ]

धनवान धन को तिजोरी में रख कर लोहे का डुकड़ा अपने पास रखता है। पहरेदार बनता है। ( ४० )

[ २६३ ]

मूढ़ा का बढ जाना झुबने का कारण है। ( ४१ )

[ २६४ ]

जो स्वयं अपने को नहीं बचा सकता वह दूसरे को क्या बचायेगा ? ( ४२ )

[ २६५ ]

जो वस्तु निषिद्ध या त्याज्य है— उसी को स्वीकार किया जायगा तो फल उल्टा ही न होगा। ( ४३ )

[ २६६ ]

एक व्यक्ति अपनी गलती से अपमानित होकर दुःख पा रहा हो उस समय यदि उसकी दूसरा व्यक्ति हँसी उढ़ाये तो उसने हृदय को कितना क्षोभ होता है— इसका सखो अनुभव होगा। ( ४४ )

[ २६७ ]

नींद ऐसी सराब वस्तु है कि काम नहीं चलाने

(ला) (४४)

[ २६८ ]

शक्ति होने पर सहनशील होने में गौरव है । ( ४६ )

[ २६९ ]

हाथ पोला तो जगह गोला । ( ४७ )

[ २७० ]

जहर की लहर तो आ ही जाती है । ( ४८ )

[ २७१ ]

धर्मों की रक्षा करना, गरीबों को मदद देना— यह सरकार का काम है । ( ४९ )

[ २७२ ]

मिट्टी सब धातुओं से ज्यादा पवित्र है । ( ५० )

[ २७३ ]

किसी का हक छीनना अपराध है । ( ५१ )

[ २७४ ]

जपानी मरतानी होती है यहाँ सच्ची बुद्धि नहीं होती ।



क्याकि वहाँ अनुभव की छाप नहीं होती । ( ५२ )

[ २७५ ]

बिना परमार्थ सोचे किमो बात का समर्थन करना  
अविद्येता का द्योतक है । ( ५३ )

[ २७६ ]

राजा का काम शंका करने का है । ( ५४ )

[ २७७ ]

माना का बदला उतरता नहीं । पर सह, का अपमान  
अनन्त ससारी बना देता है । [ ५५ ]

[ २७८ ]

बालक को देखने का हर पक्ष का दिल होता है । ( ५६ )

[ २७९ ]

बाल स्वभाव बदला नहीं जा सकता— बाल चेष्टा आ ही  
जाती है । ( ५७ )

[ २८० ]

गुणवानों के गुण प्रकट नहीं होते तब तक विश्वास  
नहीं होता । ( ५८ )

[ २८१ ]

शक्तिहानों की धनज्ञा होती है । ( ५६ )

[ २८२ ]

रत्नाकर के किनारे दरिद्र रहने में किसका दोष ? व्यक्ति  
 का या रत्नाकर का ? ( ६० )

[ २८३ ]

बिकती वस्तु जो ज्यादा दाम दे उसको मिलती है । ( ६१ )

[ २८४ ]

परमार्थ सोच कर काम करेगा वह पाप से बचेगा । ( ६२ )

[ २८५ ]

स्वार्थ साधने वाला अपराधी है । ( ६३ )

[ २८६ ]

धनकार को नमस्कार दुनियाँ करती है । ( ६४ )

[ २८७ ]

हितहित का विचार करके काम करने की प्रभु आज्ञा  
 है । ( ६५ )

[ २८८ ]

सब को अप्रीति हो वह काम नहीं करना । ( ६६ )

[ २८९ ]

“ नानी ने खसम किया तो दोहिते को दण्ड ? ” क्या यह न्याय है ? ( ६७ )

[ २९० ]

सचिव डङ्ग से वाद करने वाला वादी और विशादी—  
वितण्डावादी कहा जाता है । ( ६८ )

[ २९१ ]

पराई ऋद्धि और अपनी बुद्धि सबको अधिक मालूम  
होती है । ( ६९ )

[ २९२ ]

‘ वाद में हारने का क्या दुःख होता है ? इसका घर्णन  
यही कर सकता है जिसको इस प्रकार वाद में हारने का  
अनुभव प्राप्त हो । ( ७० )

[ २९३ ]

घातें करना सरल है पर स्वयं आचरण करना कठिन  
है । ( ७१ )

[ २६४ ]

घर पर धीतवी है वो पता चलता है । ( ७२ )

[ २६५ ]

निर्लज्ज को भय किसका । ( ७३ )

[ २६६ ]

मागते से मागना लानत है । ( ७४ )

[ २६७ ]

ब्यादा आहार विचार करता है । ( ७५ )

[ २६८ ]

घषों की आदत होती है कि वे कभी निठल्ले नहीं बैठते ।  
 यदि बैठे तो समझ लेना इसमें कोई रोग है । ( ७६ )

[ २६९ ]

लोग कुछ रीति के नाम से हर काम को मजूर कर लेते  
 हैं । अच्छी चुरी नहीं देखते । बहुत कुछ रीतियों तो ब्राह्मण  
 लोग अपने स्वार्थ के लिये चला देते हैं । ( ७७ )

[ ३०० ]

विश्व के कल्याण में अपना कल्याण है । ( ७८ )

काश्मीर से कन्या कुमारी

और

अटक से कटक तक

# वज्रदन्ती

वज्रदन्ती— विशुद्ध द्रव्यों से निर्मित सर्वोत्तम दंत मञ्जन है ।

वज्रदन्ती - दाँतों को उजले, चमकीले और मनमूत बनाने में अपना सानी नहीं रखना ।

वज्रदन्ती— की सुशुभ दिन भर मन को मस्त बनाये रहती है ।

वज्रदन्ती— आज तक ये आदिष्ट सर्वोत्तम दंत मञ्जनों में अमणी है ।

यही कारण है कि घर घर से ' वज्रदन्ती ' की मांग आ रही है ।

राजवेद्य चन्द्रगुप्त भारतीय

पिपलौदा ( C I )

